# गरीबी हटाने का शिवमंत्र

# शिवरात्रि पर्व

शिवरात्रि का पावन पर्व अथवा सर्व महान उत्सव पुनः आ गया है। यह त्यौहार आज की परिस्थिति में हमारी सर्वाधिक गंभीर समस्या का हल भी हमें सुझाता है। कोई पूछ सकता है कि त्यौहार का समस्या के साथ क्या संबंध है?

कहावत सही है परिस्थितियां ही महापुरुष को जन्म देती हैं। इसी स्थिति से हमें यह भी तो संकेत मिलता है कि जब परिस्थितियां पुरुषों तथा महापुरुषों के वश से बाहर हो गई होंगी तभी तो वे परमपुरुष (परमात्मा) शिव के अवतरण को लाई होंगी। 'रात्रि' शब्द का तो प्रयोग ही विकट परिस्थितियों के लिए होता है। घटाटोप काली रात्रि भयावह होती है, अंधेरे में मनुष्य को कुछ सूझता नहीं, मंजिल पर पहुंचने का मार्ग ही दिखाई नहीं देता। अतः त्यौहार के नाम में 'रात्रि' शब्द के प्रयोग से ही सिद्ध है कि परमात्मा का अवतरण तब हुआ होगा जब समूचा मनुष्य समाज ऐसी उलझनों में फंसा होगा कि उसे समस्याओं का समाधान नहीं मिलता होगा। 'रात्रि' शब्द को रूपक के तौर पर प्रयोग हुआ मानने से तथा इसका व्यापक अर्थ लेने से यह निष्कर्ष लेना ठीक ही है कि शिव के अवतरण काल में अवश्य ही परिस्थितियां ऐसी गंभीर रही होंगी। तभी तो भगवान को स्वयं आकाश सिंहासन छोड़ना पड़ा, नहीं-नहीं, ब्रह्मलोक से आकर मानव तन में दिव्य प्रवेश करना पड़ा।

## आज की सर्वाधिक विकट समस्या

आइये, पहले हम यह देख लें कि आज हमारे सामने सबसे अधिक दुरुह समस्या कौन सी है? देश में समस्याएं तो कई हैं परन्तु इस समय सबसे अधिक चर्चा गरीबी की है। जिस देश में श्री नारायण का राज्य था, आज वहां सभी दरिद्र नारायण बन गए हैं, करोड़ों मनुष्यों के पास रहने के लिए मकान नहीं हैं, न ही रोटी के लिए पुरे पैसे हैं।

## विडंबना

शिव के बारे में तो उक्ति है कि ,शिव के भंडारे भरपूर, काल कंटक सब दूर।' तब भारत के भंडार क्यों नहीं भरते? भारत में तो अन्य सभी देशों की अपेक्षा शिव की सर्वाधिक पूजा होती है। परमात्मा को तो 'गरीब निवाज' कहा जाता है। हमारे देश के अधिकतर लोग ईश्वर-प्रेमी अथवा प्रभु-विश्वासी हैं, फिर भी गरीबी क्यों है? क्या आजकल परमात्मा की उपाधियां ही बदल गई हैं? क्या शिव 'अमीर निवाज' बन गए हैं? शिव का अर्थ है कल्याणकारी परन्तु इस देश का तो पूरा ही अकल्याण हुआ है। यह बड़ी विडंबना है।

## कारण क्या है ?

प्रश्न उठता है कि इस स्थिति का कारण क्या है? गहराई में जाने पर आप देखेंगे कि शिव केवल दाता नहीं हैं बल्कि 'वरदाता' हैं और आज भारत के लोग उस वर से वंचित हैं। दान तो मनुष्य भी देते है परन्तु भगवान 'वर-दान' देते हैं। 'वर' का अर्थ है श्रेष्ठ। कोई भी मनुष्य श्रेष्ठ दान अथवा श्रेष्ठता (दिव्यता) का दान नहीं दे सकता इसलिए 'वरदाता' एक परमात्मा ही को माना जाता है। मनुष्य धन दान देते हैं परन्तु हो सकता है कि वह धन चोरी हो जाए, गम हो जाए या लेने वाला उसका दुरूपयोग करे। वैसे भी धन होने से स्वास्थ्य, मानसिक सुख, सम्बन्धियों से सुख आदि भी प्राप्त हों, यह जरुरी नहीं है इसलिए उस धन को वरदान नहीं कहा जा सकता।

## वरदान क्या है ?

सबसे श्रेष्ठ दान है सद्बुद्धि का अथवा दिव्य गुणों का दान जिससे लेने वाले का जीवन श्रेष्ठ बन जाए। जिस मनुष्य की मत मारी जाए या बुद्धि भ्रष्ट हो जाए या जिसकी बुद्धि अवगुण चिंतन तथा विषयों में लग जाए वह तो मनुष्यता से भी पतित हो जाता है। यूं खाने-पीने को तो विलायत में पालतू बिल्ली अथवा कुत्ते को भी अच्छा मिलता है परन्तु उसमें सद्बुद्धि अथवा विचारों की उत्तमता तो नहीं होती, उसमें मनुष्यत्व से देवत्व के दर्जे तक उठने की बुद्धि तो नहीं होती। शिव परमात्मा तो ऐसा श्रेष्ठ दान देते हैं कि मनुष्य में सद्गुण आ जाएं, अवगुण न रहें, स्वयं को तथा दूसरों को दुःख देने वाले संस्कार या विकार उसमें न रहें बल्कि उसके जीवन में श्रेष्ठता, ईश्वरीय आनंद, आत्मिक सुख और फिर सुखदायक संपत्ति भी बनी रहे।

## दिव्य बुद्धि ही सर्वश्रेष्ठ कैसे है?

हम देखते हैं कि जब किसी मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है, सोचने-समझने की शक्ति नहीं रहती तो लोग प्रायः कहते हैं, इसकी बुद्धि का दिवाला निकल गया है। इसी प्रकार जब किसी के चरित्र का पतन हो जाता है तो उसके बारे में भी कहा जाता है, इसके चरित्र का दिवाला निकल गया है। अतः केवल धन का ही दिवाला निकलना नहीं होता बल्कि दिवाला बुद्धि और चरित्र का भी होता है। वास्तव में बुद्धि एवं चरित्र का दिवाला होने से ही या तो धन का भी दिवाला निकल जाता है या धन होते हुए भी मनुष्य के जीवन में सुख-चैन नहीं होता। चरित्र की श्रेष्ठता भी बुद्धि की दिव्यता पर निर्भर करती है। यदि मनुष्य की बुद्धि सात्विक हो तो चरित्र तो सात्विक होगा ही। बुद्धि को सात्विक तथा दिव्य बनाने का साधन केवल ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग है। यह वर (श्रेष्ठ) दान परमात्मा शिव देते हैं। परंतु आज ये दोनों वरदान मनुष्य लेते ही नहीं तो वे नर से नारायण या मनुष्य से देवता बन नहीं पाते इसलिए वे दरिद्र बने हुए हैं।

यहां प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या पाश्चात्य देशों के लोगों को सद्बुद्धि, सच्चरित्रता अथवा ईश्वरीय ज्ञान एवं योग प्राप्त है कि वे समृद्धिशाली एवं संपन्न हैं? इसका उत्तर यह है कि सात्विक बुद्धि तो उन्हें भी प्राप्त नहीं है

परन्तु उनमें कर्म-परायणता, क्रियाशीलता, एकता अथवा संगठन, स्वच्छता, व्यवस्था, शासन-क्षमता, शोध एवं अविष्कार-प्रियता इत्यादि गुण हैं जबकि भारत में ये तथा अन्य ऐसे गुण कम हैं जो मनुष्य को आर्थिक प्रगति दें। पाश्चात्य देशों में भी जहां सद्गुणों की कमी है वहां उन्हें भी मन की अशांति है।

अतः शिवरात्रि के शुभ अवसर पर हम तो विशेष तौर पर भारतवासियों का तथा सामान्यतः सारे संसार का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि वरदानी शिवबाबा हमें अब जो ईश्वरीय ज्ञान व सहज राजयोग का वरदान दे रहे हैं, वह प्राप्त करके हम श्रेष्ठता को प्राप्त करें। रंक से राव, कौड़ी से हीरे तुल्य या नर से नारायण बनने की यही युक्ति है। भारत को फिर से 'सोने का देश' बनाने वाले अमर वरदानी तो परमपिता परमात्मा शिव ही है, उनको भूलने से ही भारत का यह हाल हुआ है। आज भारत में शिव के लाखों मंदिर हैं, करोड़ों पुजारी हैं परन्तु शिव जो 'वर' देते हैं वह उन्हें प्राप्त नहीं है। आज पुनः वे वर दे रहे हैं यदि कोई चाहे तो वह ले।

**ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश**

*****